विषय-सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ सं०
१.	**विषय प्रवेश**	१–२८
१.	तीर्थंकरोंका उपदेश	१
२.	कथनके भेदोंका स्पष्टीकरण	२
३	प्रकृतमें कतिपय उपयोगी सिद्धान्त	४
४.	निश्चय-व्यवहारका स्वरूप निर्देश	६
५.	उपचरित कथनके कतिपय उदाहरण	७
६	उक्त उदाहरण उपचरित कथन है इसका खुलासा	८
७	अनुपचरित कथनका विस्तृत विचार	२०
२.	**वस्तुस्वभावमीमांसा**	२८–३८
३	**बाह्यकारण मीमांसा**	३९–७०
१	उपोद्घात	३९
२	कारण सामान्यका लक्षण	४२
३	बाह्य कारणका लक्षण	४३
४	शंका-समाधान	४५
५	बाह्य पदार्थमें निमित्तता कब और क्यों	४६
६.	बाह्य कारणके दो भेदोंका विचार	५६
७	पर्यायोकी द्विविधता	६७
४	**निश्चय-उपादान मीमांसा**	७१–९९
१	प्रकृत विषयका स्पष्टीकरण	७१
२	निश्चय उपादानका लक्षण	७३
३	उपादानके सदृश कार्य होता है	८३
४	उपादान-प्रागभाव विचार	९१
५.	दृष्टिका माहात्म्य	९५
५.	**उभयनिमित्त मीमांसा**	१००–१४३
१.	उपोद्घात	१००
२.	उभयरूपसे निमित्त शब्दका प्रयोग	१०२
३	शंका-समाधान	१०६
४	व्यवहाराभासियोंका कथन	१०४
५.	व्यवहाराभासियोंके कथनका निरसन	१०६
६.	अन्य दर्शनोंका मन्तव्य	१११
७.	जैनदर्शनका मन्तव्य	११३

८. शका-समाधान ११४
९. उक्त एकान्त मतकी पुन. समीक्षा १२०
१०. शंका-समाधान १२३
११. पाँच हेतुओंका समवाय १३२
१२. उपसंहार १४२

६. कर्तृकर्ममीमांसा १४४ १८१

१ उपोद्घात १४४
२ नैयायिक दर्शन १४४
३ सक्षेपमें नैयायिक दर्शनकी मीमांसा १४७
४ जैनदर्शनका हार्द १४७
५ शका-समाधान १५१
६ कर्त्ता-कर्म विषयक सारभूत सिद्धान्त १५४
७ शंका-समाधान १५५
परके कर्तृत्वकी मान्यताका मूल अज्ञान १५९
८ प्रकृत विषयका विशेष स्पष्टीकरण १६५
९ स्वसमय-परसमयका स्वरूपनिर्देश १७१
१० उपसंहार १७६

७ षट्कारक मीमांसा १८२–२१६

१. उपोद्घात १८२
२ कारकका व्युत्पत्त्यर्थ तथा भेद १८२
३ सिद्धान्तनिर्देश १८३
४. प्रकृतमें उपयोगी शक्तियोंका स्वरूपनिर्देश १८५
५ बाह्य षट्कारक प्रक्रियाका निर्देश १८६
६. शंका-समाधान १८८
७. परमार्थको स्वीकार करनेका फल १९३
८. स्वरूपरमणके कालमे ही सम्यग्दर्शनकी उत्पत्ति होती है १९९
९ केवल निश्चय षट्कारककी चरितार्थता २०३
१०. विभाव पर्याय और निश्चय षट्कारक २११
११. उपसंहार २१३

८. क्रम नियमित पर्याय मीमांसा २१७–२७०

१. उपोद्घात २१७

२. लौकिक प्रमाणोंका कल्पित उपयोग २१८
३. लौकिक प्रमाणोंसे अपनी कल्पनाकी पुष्टि २१९
४. आगमिक प्रमाणोंका कल्पित उपयोग २२०
५. यथार्थ तथ्योंपर प्रकाश डालनेका उपक्रम २२४
६. कतिपय शास्त्रीय उदाहरण २२६
७. आ० कुन्दकुन्दके वचनका तात्पर्य २३१
८. शंका-समाधान २३४
९ कतिपय विपरीत मान्यताओंका निरसन २३९
१०. बाह्य व्याप्ति और क्रम नियमित पर्याय २५५
११. उपसहार २६८
९. सम्यक् नियति स्वरूप मीमांसा २७१–२८८
१ उपोद्घात २७१
२ शंका-समाधान २७८
३. आगमके प्रकाशमें सम्यक् नियतिका समर्थन २८१
४. उपसहार २८५
१० निश्चय-व्यवहार मीमांसा २८९–३४८
१. द्रव्य-गुण-पर्याय निर्देश २८९
२. लक्षणको दृष्टिसे द्रव्य विचार और उनके भेद २८९
३. गुणका स्वरूप २९०
४. पर्यायका स्वरूप २९०
५. प्रमाण-नयस्वरूप निर्देश २९१
६. नयोंके भेद २९५
७ अध्यात्मनय २९६
८. निश्चयनयका स्वरूपनिरूपण २९८
९. निश्चयनयके दो भेद और उनके कार्य २९९
१०. भूतार्थ और अभूतार्थ पदोंका अर्थ ३०२
११. निश्चयनयका विषय ३१०
१२. उपचार पदका अर्थ ३१३
१३ व्यवहारनयका विवेचन ३१५
१४. व्यवहारनय ३२०
१५. अध्यात्मवृत होनेका उपाय ३२१
१६. निश्चयनय एक है ३२३
१७. व्यवहारनय ३२५

१८. प्रयोजनके अनुसार नयोंकी प्ररूपणा ३२८
१९. असद्भूत व्यवहारनय ३३३
२०. अध्यात्मनयोंकी सार्थकता ३३९
२२. उपसंहार ३४२
२३. उपदेश देनेकी पद्धति ३४६
११ **अनेकान्त-स्याद्वाद मीमासा** ३४९–३८८
१. उपोद्घात ३४९
२. भेद विज्ञानकी कलाका निर्देश ३५०
३ तर्कपूर्ण शैलीमे व्यवहारका निषेध ३५१
४ अनेकान्तका स्वरूपनिर्देश ३५४
५. चार युगलोंकी अपेक्षा अनेकान्तकी सिद्धि ३५६
६ स्याद्वाद और अनेकान्त ३५९
७ सकलादेशकी अपेक्षा ऊहापोह ३५९
८. सप्तभगीका स्वरूप और उसमे प्रत्येक भंगकी सार्थकता ३५९
८. प्रत्येक भगमे अस्ति आदि पदोंकी सार्थकता ३६०
९ कालादि आठकी अपेक्षा विशेष खुलासा ३६२
१०. पूर्वोक्त विषयका सुबोध शैलीमे खुलासा ३६४
११ उदाहरण द्वारा उक्त विषयका स्पष्टीकरण ३६७
१२. जिनागममें मूल दो नयोंका ही उपदेश है ३७१
१३. स्यात् पदकी उपयोगिता ३७४
१४. अनेकान्त कथचित् अनेकान्तस्वरूप ३७५
विकलादेश और सप्तभंगी ३७६
१५ मोक्षमार्गमे दृष्टिकी मुख्यता है ३७७
१२. **केवलज्ञानस्वभावमीमांसा** ३८९
१ उपोद्घात ३८९
२. चेतन पदार्थका स्वतन्त्र अस्तित्व ३९०
३ आत्मा सर्वज्ञ और सर्वदर्शी है ३९२
४. अन्य प्रकारसे महिमावन्त केवलज्ञानका समर्थन ३९४
५. दर्पण और ज्ञानस्वभाव ३९५
६. शंका-समाधान ३९७

★

१. क्रम संख्या ८ दो बार लिपिबद्ध हो गया है।